①

Lecture. (02)

Name of the College – APSM College, Barauni, Begusarai
(L.N.M.U, Darbhanga)

Name – Dr. Bharti Kumari (AIH&C)

Lesson / Plan for class – B.A. (H). AIH&C Part I, Paper I

Name of the Topic – Maurya Kalin dharmik Jivan

Date – 15-04-2021

मौर्यकालीन धार्मिक जीवन :

मौर्यकाल का समाज मूल रूप से तीन धार्मिक सम्प्रदायों में विभक्त था – ① वैदिक ② जैन ③ बौद्ध। राज्य की ओर से किसी धर्म पर प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं था। इन धर्मों का विस्तृत वर्णन इस प्रकार है।

वैदिक धर्म :– इस युग में वैदिक धर्म ही प्रधान धर्म था। पहले की भाँति वैदिक धर्मावलम्बी अनेक प्रकार के यज्ञ किया करते थे। यज्ञों में बड़ी संख्या में पशुओं की बलि चढ़ाई जाती थी। और पुरुषों को भारी दक्षिणा देनी पड़ती थी। इसलिए यज्ञ बहुत खर्चीले थे। केवल राजा-महाराजा तथा धनी लोग ही उन्हें करवा सकते थे। चूंकि पुरोहितों को यज्ञों से आर्थिक लाभ होता था। इसलिए उनमें लोभ की वृद्धि अवश्य हुई होगी। अशोक ने पशु यज्ञों पर प्रतिबंध लगाया था। इसका उल्लेख हम पहले कर चुके हैं। स्मरण रखने की बात है कि यद्यपि इस युग में साहित्य में अश्वमेध, वाजपेय आदि

P.T.O.

यज्ञों का उल्लेख आता है, किन्तु इस युग के किसी शासक ने अश्वमेध यज्ञ नहीं किया था। मेगास्थनीज ब्राह्मणों के दार्शनिक सम्प्रदायों का भी उल्लेख करता है इससे पता चलता है कि औपनिषदिक ऋषियों ने जिस ज्ञान मार्ग का प्रवर्तन किया था उसका प्रभाव बढ़ रहा था। अशोक अपने सातवें स्तंभ लेख में ब्राह्मणों तथा निर्ग्रन्थों के साथ आजीवकों का उल्लेख करता है। अपने शासन के बारहवें वर्ष में अशोक ने बराबर की पहाड़ियों में दो गुफाएँ आजीवक भिक्षुओं को अर्पित की थी। अशोक के पौत्र दशरथ ने भी नागार्जुनी पहाड़ियों में आजीवक भिक्षुओं के लिए कुछ गुफाएँ बनवायी थी। इन सबसे यही निष्कर्ष निकलता है कि मौर्यकाल में आजीविकों का प्रभाव काफी बढ़ गया था।

जैन धर्म :— मौर्यकाल में जैनों के निर्ग्रन्थ साम्राज्य की उन्नति हो रही थी; लेकिन इसका प्रभाव मुख्यतः मगध तक ही सीमित था। मेगास्थनीज ने दार्शनिकों के एक ऐसे सम्प्रदाय का उल्लेख किया है, जिसके सदस्य जीवन भर नंगे रहते थें, माँस नहीं खाते थें और फल-फूल बटोर कर जीवन-निर्वाह करते थें। संभवतः मेगास्थनीज का आशय निर्ग्रन्थों से ही था। अशोक ने अपने सातवें स्तंभलेख में आजीविकों के साथ निर्ग्रन्थों का उल्लेख किया है।

बौद्ध धर्म :— बौद्ध धर्म के इतिहास में मौर्यकाल बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसी काल में बौद्ध धर्म बना और सम्राट अशोक ने इस धर्म को मानकर संसार में इसे फैलाने की चेष्टा की। अतएव बौद्ध धर्म का देश भीतर और बाहर काफी प्रचार हुआ। लेकिन इस समय तक बौद्ध धर्म का देश के भीतर और बाहर काफी प्रचार हुआ, लेकिन इस समय तक बौद्ध धर्म में फूट

P.T.O.

Scanned with CamScanner

(3)

फूट बहुत बढ़ गई थी। और वह दो सम्प्रदायों में विभक्त होता जा रहा था।

अशोक के समय में इस फूट ने उग्र रूप धारण कर लिया। इस फूट की खाई को पाटने के लिए सम्राट ने पाटलीपुत्र में बौद्ध भिक्षुओं की सभा बुलाई। मोग्गलीपुत्त तिस्स इसके सभापति थे। इस सभा में केवल थेरवादी भिक्षुक सम्मिलित हुए। सभा में गैर थेरवादी सिद्धान्तों का खण्डन किया और बुद्ध के मूल सिद्धान्तों को पुनः प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया गया। सभा के निर्णय कथावस्तु के नाम से संगृहित किये गये और उन्हें अभिधम्मपिटक का अंग मान लिया गया।

निष्कर्ष :— अशोक ने संघ की एकता को कायम रखने के लिए और भी उपाय किये। उसने अपने अधिकारियों को आदेश दिया कि वे संघ की फूट रोकने का प्रयत्न करें।

सांचाथ के स्तम्भ लेख में सम्राट का निम्न आदेश खुदा हुआ है — " संघ में कोई फूट न डाले किन्तु यदि संघ में फूट डालेगा चाहे वह भिक्षु हो और चाहे भिक्षुणी, उसे श्वेत वस्त्र पहना दिये जाये और ऐसी जगह रहने के लिए विवश किया जाय जो (भिक्षुओं) का निवास स्थान नहीं हो।"

अशोक बौद्ध संघ की फूट को तो दूर नहीं कर सका किन्तु उसने बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए जो कार्य किए उससे धर्म का प्रचार हुआ, इसमें संदेह बिल्कुल नहीं।

भारती कुमारी
A.I.H.&C
15-04-2021